अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार

रजि.न.34300/80 | संख्या 351 | श्री विजय पुरम, सोमवार, 29 दिसम्बर 2025 | web: dt.andamannicobar.gov.in | 2.00 रूपए

ग्रेट निकोबार समग्र विकास पहल: वैश्विक व्यापार, सतत पर्यटन और राष्ट्रीय सुरक्षा का एक रणनीतिक संगम

ग्रेट निकोबार परियोजना भारत वर्ष के लिए एक महत्वाकांक्षी समग्र विकास पहल के माध्यम से नया दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है, जिसका उद्देश्य इस दूरस्थ क्षेत्र को वैश्विक पर्यटन और समुद्री सुरक्षा के केंद्र के रूप में स्थापित करना है। भारतीय द्वीपसमूह के सबसे दक्षिणी छोर पर स्थित यह द्वीप प्रमुख अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों के निकट होने के कारण अपने अपार भू–राजनीतिक महत्व के लिए जाना जाता है। केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई यह अवसंरचना परियोजना, सतत विकास को बढ़ावा देते हुए क्षेत्र के अद्वितीय भौगोलिक लाभों का उपयोग करने के लिए बनाई गई है। एक ट्रांसशिपमेंट पोर्ट, एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और एक ग्रीनफील्ड टाउनशिप को एकीकृत करके, इस क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के लिए तैयार किया जा रहा है।

यह परियोजना चार प्रमुख स्तंभों पर आधारित है, जिनका उद्देश्य द्वीप की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए सामंजस्यपूर्ण ढंग से कार्य करना है। एक विशाल अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल की योजना है, जिससे पड़ोसी अंतरराष्ट्रीय बंदरगाहों द्वारा वर्तमान में संभाले जा रहे माल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्राप्त होने की उम्मीद है। इस समुद्री केंद्र के पूरक के रूप में एक विश्व स्तरीय अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का विकास किया जा रहा है, जिसे यात्रियों और उच्च मूल्य वाले व्यापार दोनों के लिए निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसके अलावा, बढ़ती आबादी के लिए आवश्यक आवास और सेवाएं प्रदान करने के लिए एक ग्रीनफील्ड शहर की परिकल्पना की गई है, जबकि पूरे परिसर की ऊर्जा आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने के लिए एक समर्पित विद्युत संयंत्र स्थापित किया जा रहा है।

इस परियोजना की विशालता का अंदाजा लगभग 72,000 करोड़ रुपये के अनुमानित निवेश से लगाया जा सकता है। माना जा रहा है कि इतनी बड़ी वित्तीय प्रतिबद्धता क्षेत्रीय समृद्धि के लिए उत्प्रेरक का काम करेगी। इस विकास को केवल स्थानीय सुधार के रूप में नहीं, बल्कि हिंद–प्रशांत क्षेत्र में भारत की उपस्थिति को मजबूत करने के लिए एक रणनीतिक कदम के

रूप में देखा जा रहा है। ग्रेट निकोबार को एक सशक्त आर्थिक केंद्र बनाकर, बाहरी समुद्री केंद्रों पर निर्भरता कम होने की उम्मीद है, जिससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और व्यापार मार्गों पर अधिक सीधा नियंत्रण सुनिश्चित होगा।

ग्रेट निकोबार विकास से संबंधित चर्चा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा इसकी अनूठी जैव विविधता के संरक्षण पर केंद्रित है। यह द्वीप कई स्थानिक प्रजातियों और उष्णकटिबंधीय वर्षावनों के विशाल क्षेत्रों का घर है, जिन्हें विभिन्न पर्यावरणीय नियमों के तहत संरक्षित किया गया है। इन चिंताओं को दूर करने के लिए, योजना प्रक्रिया में व्यापक शमन उपायों को शामिल किया जा रहा है। यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि द्वीप के भूभाग का एक बड़ा हिस्सा वन आवरण के अंतर्गत रहे, और लेदरबैक समुद्री कछुए के घोंसले बनाने के स्थलों की रक्षा के लिए विशिष्ट क्षेत्र निर्धारित किए जा रहे हैं।

इसके अलावा, ग्रेट निकोबार मेगापोड के संरक्षण के लिए एक विशेष योजना लागू की जा रही है ताकि इस दुर्लभ पक्षी के प्राकृतिक आवास को अपरिवर्तनीय क्षति न पहुंचे। आधुनिक बुनियादी ढांचे की आवश्यकताओं और पर्यावरण संरक्षण के नैतिक दायित्व के बीच संतुलन बनाए रखने के प्रयास किए जा रहे हैं। द्वीप पर वन भूमि के उपयोग की भरपाई के लिए देश के अन्य हिस्सों में भी वृक्षारोपण परियोजनाओं की योजना बनाई जा रही है। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना है, साथ ही मानव गतिविधियों के आवश्यक विस्तार की अनुमति देना भी है।

मलक्का स्ट्रेट के निकट स्थित ग्रेट निकोबार की रणनीतिक स्थिति इसे विश्व के सबसे व्यस्त समुद्री गलियारों में से एक के केंद्र में रखती है। इसलिए द्वीप पर सुरक्षा अवसंरचना को मजबूत करना राष्ट्रीय रक्षा के लिए एक प्राथमिकता माना जाता है। दोहरे उपयोग वाले हवाई अड्डे का विकास और बंदरगाह सुविधाओं में सुधार से समुद्री यातायात की बेहतर निगरानी और संभावित सुरक्षा खतरों पर तेजी से प्रतिक्रिया देना संभव होगा। यह द्वीप एक महत्वपूर्ण चौकी के रूप में विकसित हो रहा है जो बंगाल की खाड़ी और व्यापक हिंद महासागर में भारतीय सशस्त्र बलों की गतिविधियों में सहायता कर सकता है।

इस क्षेत्र में स्थायी और मजबूत उपस्थिति स्थापित करने से अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्गों की स्थिरता में वृद्धि होने की उम्मीद है। इस परियोजना को आसपास के जलक्षेत्र में अवैध मछली पकड़ने और समुद्री डकैती सहित अनाधिकृत गतिविधियों को रोकने वाले कारक के रूप में देखा जा रहा है। व्यापक विकास ढांचे में सुरक्षा संबंधी पहलुओं को शामिल करने से यह सुनिश्चित होता है कि यह द्वीप देश के समुद्री हितों के लिए एक आर्थिक प्रवेश द्वार और सुरक्षा कवच दोनों के रूप में कार्य करे।

निवेश के प्रवाह और नए उद्योगों की स्थापना से अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह के निवासियों के लिए अपार अवसर उत्पन्न होने की उम्मीद है। परियोजना के निर्माण और संचालन चरणों के दौरान

शेष पृष्ठ 4 पर

द्वीप पर्यटन महोत्सव 2025– भारत की एकता के कलात्मक प्रदर्शन

द्वीपों के विभिन्न स्थानों में कार्यक्रम को लोगों ने सराहा

श्री विजय पुरम, 28 दिसम्बर। अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के विभिन्न स्थानों पर कला, रंग और परंपरा का एक सप्तरंगी संगम देखने को मिला, यहां चल रही द्वीप पर्यटन महोत्सव–2025' के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। भारत की समृद्ध और विविध कलात्मक विरासत का प्रदर्शन करते हुए, इस शाम ने शास्त्रीय, लोक, जनजातीय और समकालीन कला रूपों को एक साथ लाया, जिसने स्थानीय लोगों और पर्यटकों दोनों की उत्साही भागीदारी को आकर्षित किया।

आज रविवार होने के कारण, जो सभी के लिए अवकाश का दिन है, द्वीप पर्यटन महोत्सव–2025 के मुख्य आयोजन स्थल पर भारी भीड़ देखी गई। कल शुरू हुए इस लोकप्रिय वार्षिक कार्यक्रम में लोगों ने सांस्कृतिक प्रदर्शनों, हस्तशिल्प और व्यंजनों का आनंद लिया, जिसका उद्देश्य स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देना और द्वीप के जीवन को प्रदर्शित करना है, जो पर्यटकों और स्थानीय लोगों दोनों को आकर्षित कर रहा है। पर्यटन विभाग द्वारा कला एवं संस्कृति विभाग और अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के अन्य संबंधित विभागों के सहयोग से प्रदर्शनी मैदान में आयोजित इस उत्सव में विविध कलाकारों और आकर्षणों को शामिल किया गया है, जिसका लक्ष्य अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह के लिए एक जीवंत और परिवर्तनकारी पर्यटन वर्ष बनाना है। मुख्य आयोजन स्थल की ओर आने वाले वाहनों की लंबी कतारें लग गईं, जिससे यातायात कर्मियों को सुचारू यातायात व्यवस्था बनाए रखने में काफी मशक्कत करनी पड़ी।

द्वीप पर्यटन महोत्सव के मुख्य पवेलियन में शाम की शुरुआत आदित्य नाट्य अकादमी के शानदार प्रदर्शन के साथ हुई, जिसके बाद केआरजी कलाई कावेरी स्कूल की प्रस्तुति हुई। दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों ने सिंगारीमेलम, थैय्यम और मार्शल आर्ट्स (युद्ध कला) की शक्तिशाली प्रस्तुतियों से दर्शकों को बांधे रखा, जबकि जम्मू–कश्मीर के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत जीवंत लोक नृत्य 'बधेरबाई' ने एक विशिष्ट क्षेत्रीय रंग जोड़ा।

सांस्कृतिक उत्साह विकास अकादमी, बालकृष्ण नृत्य अकादमी और गौरी शंकर शास्त्रीय नृत्य अकादमी के गरिमामय प्रदर्शनों के साथ जारी रहा, जो शास्त्रीय परंपराओं की गहराई और अनुशासन को दर्शाता है। शाम का समापन 'द कालापानी बैंड' के ऊर्जावान संगीत प्रदर्शन के साथ हुआ, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। प्रदर्शनी मैदान में स्थापित 'शोम्पेन हट' और 'निकोबारी होड़ी' लोगों के लिए मुख्य आकर्षण का केंद्र बन गए हैं।

इसी के समानांतर, मरीना एस्प्लेनेड भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों से गुलजार रहा। मुद्रा एकेडमी ऑफ क्लासिकल डांस और कैलाशपति क्लासिकल डांस एकेडमी की शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुतियों ने समां बांधा, जिसके बाद झंकार डांस ग्रुप द्वारा उत्साहपूर्ण प्रदर्शन किया गया। एसजेडसीसी के कलाकारों ने थैय्यम, मरक्कलट्टम, करगम, ओयिल और थप्पट्टम सहित पारंपरिक कला रूपों का एक रंगीन मेल प्रस्तुत किया, जो भारत की लोक विरासत की जीवंतता को उजागर करता है। विविधता को और बढ़ाते हुए, इंस्पिरेशन डांस स्टूडियो, यूथ क्लब ओग्राब्राज (कराओके) और पुलिस बैंड के प्रदर्शनों ने माहौल को जीवंत और आकर्षक बनाए रखा। शाम को छत्तीसगढ़ के संस्कृति और भाषा निदेशालय के कलाकारों द्वारा मनमोहक लोक और जनजातीय नृत्य और संगीत के साथ–साथ फ्रेंड्स कल्चरल ग्रुप और इवेंट म्यूजिकल ग्रुप द्वारा मधुर कराओके प्रदर्शन भी पेश किए गए, जिन्हें उपस्थित दर्शकों से खूब तालियाँ मिलीं।

बहु–स्थानिक उत्सवों ने एक बार फिर सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए एक जीवंत मंच के रूप में द्वीप पर्यटन महोत्सव की भूमिका को रेखांकित किया, जो विविधता में एकता को बढ़ावा देता है और द्वीपीय परिवेश में भारत की समृद्ध कलात्मक परंपराओं का उत्सव मनाता है।

विम्बर्लीगंज में भी शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रदर्शनों में नृत्यांगन द्वारा झुमुर (शास्त्रीय–लोक), श्री सीतारामंजनेय यूथ क्लब द्वारा नृत्य, पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों द्वारा संबलपुरी नृत्य और भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय, लखनऊ के कलाकारों द्वारा कथक शामिल था। गुजरात के 'रास' जैसे लोक रूपों के साथ–साथ कलांगन, द आइलैंड डेवलपमेंट और स्वराज यूथ क्लब के प्रदर्शनों ने दर्शकों को जोड़े रखा, जबकि अर्पण म्यूजिक अकादमी (लाइव बैंड) ने एक जोशपूर्ण समापन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम हटबे, बाराटांग, रंगत और कार निकोबार में भी आयोजित किए गए, जिससे पूरे द्वीप में उत्सव की भागीदारी सुनिश्चित हुई।

शेष पृष्ठ 4 पर

अंतर–विभागीय सहयोग से भटके हुए जानवरों की प्रबंधन

श्री विजय पुरम, 28 दिसम्बर। भटके हुए कुत्तों की आबादी को प्रबंधित करने और सार्वजनिक सुरक्षा बढ़ाने के एक भाग के रूप में, पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवा विभाग, जिला प्रशासन और ग्रामीण विकास विभाग के सहयोग से, सक्रिय रूप से 'पॉज' पहल को लागू कर रहा है। इसका उद्देश्य भटके हुए पशुओं की आबादी का मानवीय, वैज्ञानिक और स्थायी प्रबंधन सुनिश्चित करना है। 'पॉज' पहल के हिस्से के रूप में, 25 जुलाई, 2025 को एक ओरिएंटेशन–सह–प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें जिला प्रशासन, नगरपालिका परिषद, ग्रामीण विकास विभाग के प्रतिनिधियों, जनजातीय परिषद और पंचायती राज संस्थानों के सदस्यों, कॉलेज के छात्रों सहित सभी हितधारकों ने भाग लिया था।

यद्यपि भटके हुए पशुओं के प्रबंधन और नियंत्रण की जिम्मेदारी वैधानिक रूप से पंचायती राज संस्थाओं और नगर निकायों के अधिकार क्षेत्र में आती है, फिर भी पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवा विभाग ने एक समन्वित और मानवीय दृष्टिकोण के तहत आवश्यक पशु चिकित्सा और चिकित्सा प्रक्रियाओं, विशेष रूप से पशु जन्म नियंत्रण, नसबंदी और टीकाकरण के लिए स्वेच्छा से अपना सहयोग बढ़ाया है।

इस पहल के तहत, इस महीने के दौरान डॉ. मोहम्मद और डॉ. बलजीत कौर के नेतृत्व में दो समर्पित पशु चिकित्सा टीमें क्रमशः शहीद द्वीप और स्वराज द्वीप में तैनात की गईं। इन टीमों ने पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम और संबद्ध पशु चिकित्सा हस्तक्षेपों के तहत शहीद द्वीप में 91 जानवरों और स्वराज द्वीप में 121 जानवरों को सफलतापूर्वक कवर किया।

श्रीमती पिंकी दास (प्रधान, ग्राम पंचायत शहीद द्वीप), श्री आलोक मृधा (प्रधान, श्याम नगर), श्री अजीत रॉय (प्रधान, गोविंद नगर), श्रीमती गुरजीत कौर (बीडीओ, प्राथरापुर ब्लॉक), श्री सुधांशु विश्वास और श्रीमती सी. अलीना (पंचायत सचिव, स्वराज द्वीप) ने कार्यक्रम के दौरान जानवरों के लिए अस्थायी डॉग शेल्टर और भोजन व प्रबंधन की व्यवस्था की सुविधा प्रदान करके बहुमूल्य सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त, श्री विजय पुरम नगरपालिका परिषद ने प्रशिक्षित 'डॉग कैचर्स' उपलब्ध कराए, जिन्होंने स्थानीय

शेष पृष्ठ 4 पर

ग्रेट निकोबार समग्र विकास पहलः वैश्विक व्यापार, ————————पृष्ठ 1 का शेष

हजारों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने की संभावना है। स्थानीय कार्यबल को समुद्री, पर्यटन और सेवा क्षेत्रों में भूमिकाओं के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर विचार किया जा रहा है।

पर्यटन को भविष्य के विकास का एक प्रमुख चालक माना जाता है, जिसमें द्वीप के स्वच्छ समुद्र तट और अद्वितीय सांस्कृतिक विरासत महत्वपूर्ण आकर्षण का केंद्र हैं। सतत पर्यटन मॉडल विकसित किए जा रहे हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन से स्थानीय बुनियादी ढांचे पर अत्यधिक दबाव न पड़े और पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे। विविध अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देकर, पारंपरिक क्षेत्रों पर निर्भरता कम की जाती है और द्वीपवासियों के लिए एक मजबूत वित्तीय भविष्य सुनिश्चित किया जाता है। स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और डिजिटल कनेक्टिविटी में सुधार भी टाउनशिप की योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि विकास का लाभ सभी निवासियों को मिले।

प्रस्तावित ग्रीनफील्ड टाउनशिप को स्मार्ट सिटी के रूप में डिजाइन किया जा रहा है, जिसमें शहरी नियोजन और टिकाऊ प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति का उपयोग किया जा रहा है। द्वीप की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की खोज की जा रही है। नए शहरी केंद्र के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों और जल विलवणीकरण संयंत्रों को मास्टर प्लान में एकीकृत किया जा रहा है।

डिजिटल अवसंरचना पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जिसके तहत उच्च गति इंटरनेट सुविधा प्रदान करने के लिए समुद्र के नीचे फाइबर–ऑप्टिक केबल बिछाई जा रही हैं। यह कनेक्टिविटी आधुनिक माल ढुलाई बंदरगाह के संचालन और द्वीप पर वैश्विक व्यवसायों को आकर्षित करने के लिए आवश्यक है। तकनीकी रूप से उन्नत वातावरण बनाकर, ग्रेट निकोबार को एक ऐसे भावी गंतव्य के रूप में स्थापित किया जा रहा है जो स्थापित अंतरराष्ट्रीय केंद्रों से प्रतिस्पर्धा कर सकता है। उच्च तकनीक अवसंरचना और द्वीप की प्राकृतिक सुंदरता के बीच तालमेल का उद्देश्य निवासियों और निवेशकों दोनों के लिए एक अनूठा और आकर्षक स्थान बनाना है।

ग्रेट निकोबार का कायापलट हिंद–प्रशांत क्षेत्र के क्षेत्रीय एकीकरण के प्रति दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के रूप में देखा जा रहा है। दक्षिण एशिया और दक्षिणपूर्व एशिया के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करते हुए, इस द्वीप से क्षेत्रीय कूटनीति और आर्थिक सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। यह परियोजना कनेक्टिविटी बढ़ाने और पड़ोसी समुद्री देशों के साथ मजबूत साझेदारी बनाने के उद्देश्य से बनाई गई व्यापक राष्ट्रीय नीतियों के अनुरूप है।

जैसे–जैसे विकास आगे बढ़ेगा, यह द्वीप वैज्ञानिक अनुसंधान और पर्यावरण निगरानी का केंद्र बनने की संभावना है। इस क्षेत्र के अनूठे पारिस्थितिकी तंत्र जलवायु परिवर्तन और समुद्री जीव विज्ञान के अध्ययन के लिए एक जीवंत प्रयोगशाला प्रदान करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान पहलों की मेजबानी करके, ग्रेट निकोबार इन महत्वपूर्ण मुद्दों की वैश्विक समझ में योगदान दे सकता है। अंततः द्वीप का समग्र विकास एक बहुआयामी प्रयास है जो आर्थिक विकास, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्रीय सुरक्षा में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है, जिससे अंततः इस रणनीतिक प्रवेश द्वार के लिए एक स्थायी और समृद्ध भविष्य का निर्माण हो सके। (स्रोत :**www.travelandtourworld.com**)

द्वीप पर्यटन महोत्सव 2025– भारत की एकता————————पृष्ठ 1 का शेष

हटबे में, श्री सीतारामंजनेय मंदिर समिति और नृत्य अकादमी ऑफ क्लासिकल डांस द्वारा प्रस्तुतियाँ दी गईं।

बाराटांग में, ईजेडसीसी के कलाकारों द्वारा महामाया, नेताजी–थीम वाले रचनात्मक नृत्य और संगीत म्यूजिकल ग्रुप के प्रदर्शन ने प्रशंसा बटोरी।

रंगत में, एसजेडसीसी के कलाकारों ने मरक्कलट्टम, करगम, ओयिल, मार्शल आर्ट्स, थप्पट्टम, थिरा और थैय्यम सहित पारंपरिक रूपों का प्रदर्शन किया, जिसके बाद सृष्टि कल्चरल ग्रुप द्वारा कराओके प्रदर्शन किया गया।

कार निकोबार में, एसजेडसीसी के कलाकारों ने पारंपरिक और अनुष्ठानिक नृत्यों के प्रभावशाली प्रदर्शन के साथ मरक्कलट्टम, करगम, ओयिल, मार्शल आर्ट्स, थप्पट्टम, थिरा और थैय्यम प्रस्तुत किया, जिसके बाद ड्रीम वर्ल्ड एंटरटेनर द्वारा एक जीवंत कराओके कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इन व्यापक समारोहों में स्थानीय लोगों और आगंतुकों की उत्साही भागीदारी देखी गई, जिसने सांस्कृतिक आदान–प्रदान और भारत की समृद्ध कलात्मक परंपराओं को बढ़ावा देने के लिए एक जीवंत मंच के रूप में द्वीप पर्यटन महोत्सव की भूमिका को और मजबूत किया।

द्वीप पर्यटन महोत्सव–2025 के भाग के रूप में मरीना एस्प्लेनेड में सांस्कृतिक कार्यक्रम

द्वीप पर्यटन महोत्सव–2025 के भाग के रूप में कार निकोबार में सांस्कृतिक कार्यक्रम

द्वीप पर्यटन महोत्सव–2025 के भाग के रूप में रंगत में सांस्कृतिक कार्यक्रम

द्वीप पर्यटन महोत्सव–2025 के भाग के रूप में विम्बर्लीगंज में सांस्कृतिक कार्यक्रम

अंतर–विभागीय सहयोग से भटके हुए जानवरों की————————पृष्ठ 1 का शेष

स्वयंसेवकों को मानवीय तरीके से कुत्ते पकड़ने की विधियों में प्रशिक्षित किया, जिससे कार्यक्रम के सुचारू कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान मिला।

स्वराज द्वीप में प्राप्त प्रगति से उत्साहित होकर, अब उत्तरी और मध्य अंडमान के लिए भी इसी तरह की पशु चिकित्सा टीमें गठित की गई हैं। प्रभावी कवरेज और निरंतर परिणाम सुनिश्चित करने के लिए संबंधित जिला प्रशासन और स्थानीय निकायों के समन्वय से मैदानी अभियानों की योजना बनाई जा रही है। यह अभियान रंगत और डिगलीपुर के कस्बों को कवर करेगा, जहाँ एबीसी कार्यक्रमों का उद्देश्य अधिकतम संख्या में भटके हुए कुत्तों की नसबंदी करना होगा। साथ ही, आम जनता, विशेष रूप से स्कूली बच्चों को भटके हुए कुत्तों की आबादी के प्रबंधन में उनकी भूमिका और मानव–कुत्ता संघर्ष से बचने की आवश्यकता के बारे में जागरूक किया जाएगा। पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवा विभाग इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए निवासियों, प्रधानों और स्थानीय गैर–सरकारी संगठनों से सहयोग का सादर अनुरोध करता है।

अंडमान निकोबार प्रशासन ने सार्वजनिक स्थानों पर भटके हुए पशुओं की उपस्थिति की सूचना देने के लिए ''हेल्पलाइन नंबर ईआरएसएस–112'' नामित किया है।

पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवा विभाग की प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 'पॉज' का सहयोगात्मक कार्यान्वयन राष्ट्रीय दिशा–निर्देशों और न्यायिक निर्देशों के अनुरूप जिम्मेदार भटके हुए पशु प्रबंधन, सामुदायिक भागीदारी और मानवीय पशु कल्याण प्रथाओं के प्रति प्रशासन की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

बीसीसीआई ने अंडर–19 विश्व कप के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने आगामी आईसीसी अंडर–19 विश्व कप के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। यह विश्व कप जिम्बाब्वे और नामीबिया में अगले साल 15 जनवरी से 6 फरवरी तक खेला जाएगा। टीम की कप्तानी आयुष म्हात्रे करेंगे जबकि विहान मल्होत्रा उप–कप्तान होंगे। वैभव सूर्यवंशी, आरोन जॉर्ज और अभिज्ञान कुंडू भी टीम का हिस्सा हैं।

पुष्प प्रदर्शनी, सब्ज़ और फल प्रदर्शनी आज

श्री विजय पुरम, 28 दिसम्बर। द्वीप पर्यटन महोत्सव 2025 के एक भाग के रूप में, कृषि विभाग सोमवार 29 दिसंबर, 2025 को प्रदर्शनी मैदान में पुष्प प्रदर्शनी, सब्ज़ और फल प्रदर्शनी प्रतियोगिता आयोजित करेगा। पुष्प प्रदर्शनी की प्रतियोगिताएं विभिन्न श्रेणियों जैसे ताजे फूलों की सजावट, सूखे फूलों की सजावट, फ्लैट गुलदस्ते, माला और रंगोली बनाने में आयोजित की जाएंगी। किसानों द्वारा उगाई गई सब्जियों और फलों की गुणवत्तापूर्ण प्रदर्शनी प्रतियोगिता के लिए प्रदर्शित की जाएगी और पुरस्कृत की जाएगी। इच्छुक प्रतिभागी निकटतम कृषि उप–डिपो प्रभारियों और सहायक निदेशक (कृषि) दक्षिण अण्डमान, कृषि निदेशालय, हैडो से संपर्क कर सकते हैं। कृषि विभाग की प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि अधिक विवरण के लिए किसान कॉल सेंटर से 03192–243434 / 1800–345–1145 पर संपर्क करें।

प्रदर्शनी मैदान में स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता मंगलवार को

श्री विजय पुरम, 28 दिसम्बर। 27 दिसंबर से 31 दिसंबर, 2025 तक आयोजित द्वीप पर्यटन महोत्सव के अंतर्गत, स्वास्थ्य सेवा निदेशालय द्वारा केंद्र शासित प्रदेश स्वास्थ्य मिशन (यूटीएचएम), अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के सहयोग से 30 दिसंबर, 2025 को सुबह 9 बजे से वीआईपी रोड स्थित प्रदर्शिनी मैदान, श्री विजय पुरम में स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

दक्षिण अण्डमान के प्रतिभागियों के माता–पिता से अनुरोध किया गया है कि वे 30 दिसंबर, 2025 को सुबह 9 बजे अपने बच्चों के साथ प्रदर्शिनी मैदान में आयोजित स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता–2025 में भाग लें।

स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता का विवरण निम्नानुसार है:

01	प्रतियोगिता की तिथि	30 दिसम्बर, 2025
02	समय	सुबह 9 बजे से
03	श्रेणियाँ	(1) 6 महीने से 1 वर्ष तक (2) 1 वर्ष से 3 वर्ष (3) 3 वर्ष से 5 वर्ष
04	शिशुओं का पंजीकरण	सुबह 9 बजे से 10 बजे तक
05	मूल्यांकन	सुबह 10 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक
06	विनर का नाम प्रिंट / इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में पब्लिश किया जाएगा	
07	सर्टिफिकेट उसी दिन 30 दिसंबर, 2025 को बांटे जाऐंगे	
08	हेल्दी बेबी कॉन्टेस्ट के लिए टेस्टिमोनियल्स को वेरिफाई किया जाना है। 1/4) बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र। 2/4) माँ का एएनसी कार्ड / एमसीपी कार्ड। 3/4) इम्यूनाइज़ेशन कार्ड. 4/4) अगर कोई फ़ैमिली प्लानिंग का तरीका अपनाया गया हो, तो उसका प्रमाण।	

स्वास्थ्य सेवा निदेशालय से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार यह स्वास्थ्य एवं खुशहाली का उत्सव है, जो प्रारंभिक बाल्यावस्था के स्वास्थ्य के महत्व को रेखांकित करता है। स्वास्थ्य सेवा निदेशालय 30 दिसंबर, 2025 को प्रदर्शिनी मैदान में दक्षिण अण्डमान के स्वस्थ शिशुओं की जीवंत एवं उत्साहपूर्ण भागीदारी की प्रतीक्षा कर रहा है।

समग्र शिक्षा के तहत एक्सपोजर विजिट

डिगलीपुर, 28 दिसंबर। समग्र शिक्षा (समावेशी शिक्षा) के तहत ब्लॉक परियोजना कार्यालय, डिगलीपुर ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय, सुभाषग्राम में एक ब्लॉक स्तरीय एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य समावेशी, बाल–सुलभ और गतिविधि–आधारित शिक्षण प्रथाओं को बढ़ावा देकर पूर्व–प्राथमिक शिक्षा को मजबूत करना था। कार्यक्रम के दौरान, विभिन्न संसाधन व्यक्तियों ने विभिन्न विषयों पर सत्र दिए, जिनमें कक्षा का वातावरण, शिक्षण–अधिगम सामग्री का प्रभावी उपयोग, गतिविधि–आधारित शिक्षण विधियां और गतिविधियों के बीच सुचारू परिवर्तन शामिल थे। बीपीओ डिगलीपुर की प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि शिक्षकों को समावेशी शिक्षा रणनीतियों, सीडब्ल्यूएसएन के लिए ब्लॉक–स्तरीय संसाधन कक्षों के उपयोग और कक्षा सुधार के लिए लक्ष्य निर्धारण पर भी ओरिएंट (शिक्षित) किया गया।

मनुष्य–पशु संघर्ष पर जागरूकता कार्यक्रम

श्री विजय पुरम, 28 दिसम्बर। भटके हुए कुत्तों के काटने की रोकथाम और प्रबंधन पर अपने गहन द्वीप–व्यापी जन जागरूकता अभियान को जारी रखते हुए, पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवा विभाग ने हाल ही में डेयरी फार्म स्कूल के छात्रों और कर्मचारियों के लिए एक जागरूकता सत्र आयोजित किया। संसाधन व्यक्ति ने जानवरों, विशेष रूप से भटके हुए और पालतू कुत्तों के आसपास अपनाए जाने वाले निवारक व्यवहार, जानवरों के काटने के मामले में तत्काल प्राथमिक चिकित्सा के उपायों और बिना देरी किए पालन किए जाने वाले सही रिपोर्टिंग प्रोटोकॉल के बारे में विस्तार से बताया।

प्रतिभागियों को व्यावहारिक सुरक्षा कदमों से परिचित कराया गया। पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवा विभाग की प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया कि भटके हुए कुत्तों की आबादी को मानवीय और वैज्ञानिक नियंत्रण में रखने के लिए चल रहे एनिमल बर्थ कंट्रोल कार्यक्रम के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया।

ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 2025 का नमूनाघर में उद्घाटन

श्री विजय पुरम, 28 दिसम्बर। 'माई भारत', श्री विजय पुरम के तत्वावधान में आज नमूनाघर में फरारगंज ब्लॉक के लिए '''ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 2025''' का भव्य उद्घाटन किया गया। ''व्यक्तिगत स्पर्धाएं:'' रस्साकशी, 100 मीटर दौड़ (पुरुष एवं महिला), और टेबल टेनिस सिंगल्स (पुरुष एवं महिला)– ये स्पर्धाएं विम्बर्लीगंज के कन्यापुरम इंडोर स्टेडियम में आयोजित की गईं।

वॉलीबॉल टूर्नामेंट के आयोजन के इस अवसर पर नमूनाघर के ग्राम पंचायत प्रधान, श्री वेंकट राव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अपने संबोधन में उन्होंने युवाओं को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए खेलों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया और अनुशासन, एकता तथा टीम वर्क के महत्व पर जोर दिया।

कन्यापुरम के प्रधान, श्री पी. अब्दुल बशीर ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शिरकत की। उन्होंने युवाओं को जोड़ने के लिए रचनात्मक मंच प्रदान करने में 'माई भारत' के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे अपनी प्रतिभा दिखाने और नेतृत्व गुण विकसित करने के लिए ऐसे अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं।

इसके अतिरिक्त, आज जेएनआरएम मैदान में प्राथरापुर ब्लॉक के लिए पुरुष वॉलीबॉल टूर्नामेंट और पुरुषों व महिलाओं की 100 मीटर दौड़ आयोजित की गई। इस अवसर पर 'माई भारत' के संयुक्त निदेशक श्री एस. आर. बिश्वास उपस्थित थे। उन्होंने चरित्र निर्माण और युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली की ओर प्रेरित करने में अनुशासन और खेलों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का समन्वय 'माई भारत' के श्री गोपाल सी. एच. बिस्वास द्वारा किया गया। डॉ. विनोद कुमार ने टूर्नामेंट में रेफरी की भूमिका निभाई। अण्डमान महिला मंडल की सचिव डॉ. सुनीता पाटिल भी उपस्थित रहीं और उन्होंने कार्यक्रमों के सुचारू संचालन में अपना सहयोग दिया। इस खेलकूद प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य द्वीपों के युवाओं के बीच फिटनेस, खेल भावना और सकारात्मक पहल को बढ़ावा देना है।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी' सोणी, फोन–229400
E-Mail:dweepsamachar@gmail.com

प्रधानमंत्री ने मुख्य सचिवों की बैठक की अध्यक्षता की, शासन सुधारों पर हुई चर्चा

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को नई दिल्ली में मुख्य सचिवों के राष्ट्रीय सम्मेलन की पांचवीं बैठक की। यह कार्यक्रम अभी भारत मंडपम में चल रहा है। इस कार्यक्रम का मकसद केंद्र और राज्यों को देश की राष्ट्रीय ग्रोथ के लिए अपनी प्राथमिकताओं को एक साथ लाना है।

सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने 'ज्ञानवर्धक' बातचीत की, जिसमें भारत के प्रशासनिक सिस्टम को बेहतर बनाने के लिए सुधार और परफॉर्मेंस के महत्व पर जोर दिया गया। प्रधानमंत्री ने कहा, "दिल्ली में हो रहे मुख्य सचिवों के राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान गवर्नेंस और सुधारों से जुड़े अलग–अलग मुद्दों पर ज्ञानवर्धक चर्चा हुई।"

इस साल का सम्मेलन 'विकसित भारत के लिए मानव पूंजी' थीम पर आधारित है और इसमें शुरुआती बचपन की शिक्षा, स्कूली शिक्षा, स्किलिंग, उच्च शिक्षा और एक्स्ट्रा करिकुलम एक्टिविटीज में विकास पर फोकस करने वाले फोरम शामिल हैं। इस सम्मेलन में राज्यों में डीरेगुलेशन, गवर्नेंस में टेक्नोलॉजी और आत्मनिर्भर भारत के तहत प्रोजेक्ट्स पर भी चर्चा शामिल है। यह कार्यक्रम नीति आयोग द्वारा केंद्रीय मंत्रालयों और राज्यों के साथ मिलकर आयोजित किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम का मकसद भारत की मानव पूंजी की क्षमता को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने के लिए एक कॉमन रोडमैप को अंतिम रूप देना है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री

श्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को गुरु गोबिंद सिंह जी के पवित्र प्रकाशोत्सव के अवसर पर उन्हें नमन किया।

प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एक भावुक संदेश साझा किया। उन्होंने लिखा, "श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के पवित्र प्रकाश उत्सव पर हम उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। वे साहस, करुणा और बलिदान की मूर्ति हैं। उनका जीवन और शिक्षाएं हमें सच्चाई, न्याय, धर्म के लिए खड़े होने और मानवीय गरिमा की रक्षा करने के लिए प्रेरित करती हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी का विजन पीढ़ियों को सेवा और निस्वार्थ कर्तव्य के लिए मार्गदर्शन करता रहता है।"

उन्होंने इस साल की शुरुआत में तख्त श्री हरिमंदिर जी पटना साहिब की अपनी यात्रा की कुछ यादगार तस्वीरें साझा कीं। इन तस्वीरों में प्रधानमंत्री को गुरुद्वारे में प्रार्थना करते, जोड़ा साहिब के दर्शन करते और सेवादारों के साथ लंगर परोसते हुए देखा जा सकता है।

न बड़ा मंच, न बड़ा बजट, सांस्कृतिक केंद्र बना 'गीतांजलि आईआईएससी', 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने सराहा

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'गीतांजलि आईआईएससी' ग्रुप की प्रशंसा की है। उन्होंने कहा कि 'गीतांजलि आईआईएससी' यह अब सिर्फ एक क्लास नहीं, बल्कि कैंपस का सांस्कृतिक केंद्र है। यहां हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, लोक परंपराएं व शास्त्रीय विधाएं हैं और छात्र यहां साथ बैठकर रियाज करते हैं।

प्रधानमंत्री ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा, "आज का जीवन टेक संचालित होता जा रहा है। जो परिवर्तन सदियों में आते थे वो बदलाव हम कुछ बरसों में होते देख रहे हैं। कई बार तो कुछ लोग चिंता जताते हैं कि रोबोट्स कहीं मनुष्यों को ही न रिप्लेस कर दें। ऐसे बदलते समय में मानव विकास के लिए अपनी जड़ों से जुड़े रहना बहुत जरूरी है।"

उन्होंने कहा, "मुझे ये देखकर बहुत खुशी होती है कि नई सोच के साथ और नए तरीकों के साथ हमारी अगली पीढ़ी अपनी संस्कृति की जड़ों को अच्छी तरह थाम रही है। भारतीय विज्ञान संस्थान की पहचान रिसर्च और इनोवेशन है। कुछ साल पहले वहां के कुछ छात्रों ने महसूस किया कि पढ़ाई और रिसर्च के बीच संगीत के लिए भी जगह होनी चाहिए। बस यहीं से एक छोटी–सी म्यूजिक क्लास शुरू हुई।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि ना बड़ा मंच और ना कोई बड़ा बजट, बस धीरे–धीरे ये पहल बढ़ती गई और आज इसे हम

'गीतांजलि आईआईएससी' के नाम से जानते हैं। उन्होंने कहा कि छात्र यहां साथ बैठकर रियाज करते हैं। प्रोफेसर साथ बैठते हैं और उनके परिवार भी जुड़ते हैं। प्रधानमंत्री ने बताया कि आज दो–सौ से ज्यादा लोग इससे जुड़े हैं। खास बात ये कि जो विदेश चले गए, वो भी ऑनलाइन जुड़कर इस ग्रुप की डोर थामे हुए हैं।

इसी बीच, प्रधानमंत्री ने देश के युवाओं से 'हैकेथन्स' से जुड़ने की अपील की। उन्होंने कहा कि पिछले 7–8 साल में 'स्मार्ट इंडिया हैकथॉन' में 13 लाख से ज्यादा छात्र और 6 हजार से ज्यादा संस्थान हिस्सा ले चुके हैं । युवाओं ने सैंकड़ों समस्याओं के सटीक समाधान भी दिए हैं। इस तरह के 'हैकेथन्स'का आयोजन समय–समय पर होता रहता है।

केंद्रीय मंत्री ने परमाणु ऊर्जा के सतत दोहन और विकास–शांति विधेयक को सरकार का बड़ा विज्ञान सुधार बताया

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने भारत को बदलने के लिए परमाणु ऊर्जा का सतत दोहन और विकास–शांति विधेयक को सरकार के सबसे बड़े विज्ञान सुधारों में से एक बताया है। आज नई दिल्ली में मीडिया से बातचीत में श्री सिंह ने कहा कि वर्ष 2014 में भारत की परमाणु ऊर्जा क्षमता लगभग 4 दशमलव 4 गीगावाट से बढ़कर आज लगभग 8 दशमलव 7 गीगावाट हो गई है। उन्होंने कहा कि शांति विधेयक भारत के परमाणु क्षेत्र में एक ऐतिहासिक सुधार है, जो सुरक्षा, संप्रभुता और जनहित के मानकों को बरकरार रखते हुए शांतिपूर्ण, स्वच्छ और सतत ऊर्जा के लिए इसकी क्षमता को सामने रखता है।

श्री सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में विज्ञान, नवाचार और उद्यमिता वाले

साहसिक, संरचनात्मक सुधारों पर जोर दिया गया है। उभरती कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम और डेटा–आधारित अर्थव्यवस्था की मांगों पर उन्होंने कहा कि परमाणु ऊर्जा निरंतर, विश्वसनीय बिजली आपूर्ति के लिए अपरिहार्य है।

सिर्फ एक बार चली और बन गया तालाब, पढ़ें दुनिया की सबसे बड़ी तोप 'जयबाण' की कहानी

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

भारत का इतिहास शूरवीरों और उनकी अद्भुत शक्ति के किस्सों से भरा हुआ है। इन्हीं ऐतिहासिक धरोहरों में से एक है 'जयबाण तोप', जो अपनी विशालता और तकनीक के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। यह तोप न केवल भारत, बल्कि विश्व की सबसे बड़ी पहियों पर चलने वाली तोप मानी जाती है। राजस्थान के जयपुर में स्थित जयगढ़ किले की शोभा बढ़ाने वाली यह तोप आज भी पर्यटकों के लिए आश्चर्य का विषय है।

इतिहास और अद्भुत इंजीनियरिंग का नमूना

इस विशालकाय तोप का निर्माण 18वीं शताब्दी में महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय के शासनकाल के दौरान किया गया था। सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि इतनी बड़ी तोप को बाहर से नहीं लाया गया, बल्कि इसे जयगढ़ किले के भीतर ही बनी एक ढलाई कार्यशाला में तैयार किया गया था। यह तथ्य उस समय के भारतीय धातुकर्म और इंजीनियरिंग की उन्नत समझ का जीता–जागता सबूत है।

विशालता और मारक क्षमता

जयबाण तोप का आकार देखकर कोई भी दंग रह सकता है। इसकी लंबाई लगभग 20 फीट है और इसका वजन करीब 50 टन है। इसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए इसमें लोहे के 4 मजबूत पहिए लगाए गए हैं। इसकी बाहरी सतह पर संस्कृत भाषा में शिलालेख भी लिखे हुए हैं। इसकी मारक क्षमता उस दौर के हिसाब से असाधारण थी, क्योंकि यह तोप लगभग 30 से 35 किलोमीटर दूर तक गोला दागने में सक्षम थी।

जब तोप के गोले से बन गया तालाब

इस तोप से जुड़ी एक बहुत ही दिलचस्प घटना प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि इस तोप का इस्तेमाल कभी किसी वास्तविक युद्ध में नहीं किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य दुश्मन के मन में डर पैदा करना और राज्य की शक्ति का प्रदर्शन करना था। इसे केवल एक बार परीक्षण के लिए चलाया गया था।

उस परीक्षण में दागा गया गोला जयपुर से कई किलोमीटर दूर श्चाकसूश नामक जगह पर गिरा। गोले के गिरने से वहां जमीन में इतना बड़ा गड्ढा हो गया कि उसने एक तालाब का रूप ले लिया। स्थानीय लोग आज भी उस तालाब को 'तोप का तालाब' के नाम से जानते हैं।

जयबाण तोप केवल एक हथियार नहीं, बल्कि भारत की ऐतिहासिक समृद्धि और तकनीकी कौशल का प्रतीक है। युद्ध में इस्तेमाल न होने के बावजूद, यह तोप सदियों से जयगढ़ किले में शान से खड़ी है और आने वाली पीढ़ियों को भारत के गौरवशाली अतीत की याद दिलाती रहती है।

डिग्री नहीं, अब स्किल्स हैं सफलता की चाबी! हार्वर्ड की रिपोर्ट ने खोला बड़ा राज

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

बीते कुछ वर्षों में टेक्नोलॉजी में हुए इनोवेशन और अपग्रेडेशन के बाद से, मार्केट में कंपटीशन काफी बढ़ गया है. अब अच्छी जॉब और बढ़िया इंकम के लिए लोगों को स्किल्स पर काम करना पड़ रहा है, जिसके चलते डिग्री की वैल्यू काफी कम हो गई है. ऐसे में कई स्टूडेंट्स इस बात को लेकर चिंता में रहते हैं कि क्या उनकी डिग्री उन्हें बेहतर जॉब ऑपर्च्युनिटी दिलाने में मदद करेगी?

दरअसल, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के इकोनॉमिस्ट ने अपनी एक रिसर्च में ये बताया है कि कैसे आजकल सर्टिफिकेट और डिग्री केवल एक कागज का टुकड़ा बनकर रह गई है और बाजार में डिग्री थकान का दौर चल रहा है. जिसमें अच्छी जॉब के लिए केवल डिग्री होना काफी नहीं है.

हार्वर्ड के लेबर इकोनॉमिस्ट डेविड जे डेमिंग और रिसर्चर कदीम नोरे ने अपनी 2020 की रिसर्च में बताया कि एप्लाइड साइंसेज, कंप्यूटर साइंस, इंजीनियरिंग और मार्केटिंग जैसी डिग्री का आज कोई मोल नहीं रह गया है. इससे ये पता चलता है कि उस समय सक्सेस की चाबी माने जाने वाली ये डिग्रियां अब आउटडेटेड हो चुकी है. इतना ही नहीं आज बिजनेस डिग्रीज भी आपको इम्यूनिटी नहीं दे सकती. हार्वर्ड बिजनेस स्कूल ने बताया कि टॉप MBA ग्रेजुएट्स भी आज मार्केट में हाई पे जॉब्स के लिए स्ट्रगल कर रहे हैं. ऐसे में डिग्री की चमक किस्मत चमकने में नाकामयाब होती नजर आ रही है.

जहां एक ओर एप्लाइड साइंसेस का हाल इस कदर बुरा तो वहीं दूसरी ओर ह्यूमैनिटीज के लिए स्टूडेंट्स का घटता इंटरेस्ट भी चिंता का विषय है. हार्वर्ड क्रिमसन के डाटा के अनुसार, ह्यूमैनिटीज को करियर ऑप्शन के तौर पर चुनने वालों की संख्या में गिरावट देखने को मिली है. ऐसे में स्टूडेंट्स ने STEM और करियर फोकस्ड प्रोग्राम्स में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई है. साथ ही हार्वर्ड की 2022 की रिपोर्ट में देखने को मिला है कि मार्केट में अब कंपनिया जेनेरिक डिग्रीज की बजाय स्पेसिफिक स्किल्स और डिजिटल लिटरेसी वाली डिग्रीज को प्रेफरेंस देती हैं. 2025 की एक स्टूडेंट चॉइस रिपोर्ट के अनुसार, रैंकिंग इंजीनियरिंग , कंप्यूटर साइंस एंड नर्सिंग की मार्केट डिमांड काफी है. ऐसे में इस कॉम्पटीटिव मार्केट में वो स्टूडेंट्स सरवाइव कर पाएंगे जिनके पास डिग्री के अलावा स्किल्स, इंटेलिजेंस, क्रिएटिविटी और क्रिटिकल थिंकिंग होगी.

इतिहास के पन्नों में 29 दिसंबर: 1975 में ब्रिटेन में महिला और पुरुषों के समान अधिकारों से जुड़ा कानून लागू

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

1975 में ब्रिटेन ने लैंगिक समानता की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाया। इसी वर्ष सेक्स डिस्क्रिमिनेशन एक्ट लागू किया गया, जिसके तहत महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार प्रदान करना कानूनी रूप से अनिवार्य बना दिया गया। इस कानून का उद्देश्य शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जीवन में लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव को समाप्त करना था।

कानून के लागू होने के बाद नौकरी, वेतन, पदोन्नति और कार्यस्थल की शर्तों में महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर और अधिकार मिलने लगे। साथ ही, इसने समाज में महिलाओं की स्थिति को मजबूत करने और उनके खिलाफ भेदभावपूर्ण व्यवहार को चुनौती देने का रास्ता खोला।

यह कानून न केवल ब्रिटेन में महिला सशक्तिकरण की नींव बना, बल्कि दुनिया भर के कई देशों के लिए लैंगिक समानता से जुड़े कानूनों की प्रेरणा साबित हुआ।

महत्वपूर्ण घटनाचक्र

1530–मुगल शासक बाबर का बेटा हुमायूं उसका उत्तराधिकारी बना।

1778–ब्रिटेन की सेना ने अमेरिकी राज्य जॉर्जिया पर क़ब्ज़ा किया।

1845–टेक्सास अमेरिका का 28वां राज्य बना।

1911–सुन यात सेन को नए चीन गणतंत्र का राष्ट्रपति घोषित किया गया।

1911–मंगोलिया किंग वंश के शासन से आजाद हुआ।

1922–नीदरलैंड ने संविधान अंगीकार किया।

1949–यूरोपीय देश हंगरी में उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया गया।

1951–अमेरिका के आणविक ऊर्जा आयोग के अधिकारियों ने आणविक ऊर्जा से बिजली उत्पादन के संबंध में पहली बार खुलासा किया।

1972–अमेरिका में लोरिडा राज्य के एवरग्लैड्स के समीप इस्टर्न त्रिस्टार जम्बो जेट विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से 101 लोगों की मौत हुई।

1975–ब्रिटेन में महिलाओं और पुरुषों के समान अधिकारों से जुड़ा कानून लागू।

1977–विश्व का सबसे बड़ा ओपन एयर थियेटर श्ड्राइवश बंबई (अब मुम्बई) में खुला।

1978–स्पेन में संविधान प्रभाव में आया।

1980–सोवियत संघ के पूर्व प्रधानमंत्री कोसिगिन का देहान्त।

1983–भारतीय क्रिकेटर सुनील गावास्कर ने टेस्ट क्रिकेट

में अधिकतम 236 रन वेस्टइंडीज के खिलाफ बनाये।

1984–कांग्रेस ने स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे भारी बहुमत से संसदीय चुनाव जीता था। इस चुनाव में 28 सीटें जीतकर तेलुगु देश में सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी के तौर पर उभरी।

1985–श्रीलंका ने 43,000 भारतीयों को नागरिकता प्रदान की।

1988–ऑस्ट्रेलिया में विक्टोरियाई पोस्ट ऑफिस संग्रहालय बंद हुआ।

1988–सिद्धार्थनगर जिला का निर्माण बस्ती जिले में किया गया था। नए जिले में बस्ती का उत्तरी भाग शामिल है।

1998–कंबोडिया पर 1975 से 1979 के बीच नियंत्रण करने वाले कट्टरपंथी कम्युनिस्ट संगठन ख्मेर रूज के नेताओं ने उनके शासन के दौरान तकरीबन 15 लाख लोगों के मारे जाने पर सार्वजनिक रूप से माफी मांगी।

1989–वाक्लाव हाबेल 1948 के बाद पहली बार चेकोस्लोवाकिया के ग़ैर–साम्यवादी राष्ट्रपति चुने गये।

1996–नाटो के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए एकत्र होकर कार्य करने के मुद्दे पर रूस एवं चीन में सहमति।

1998–विश्व के पहले परमाणु बम बनाने वाले अमेरिकी वैज्ञानिक रेगर सक्रेबर का निधन।

2001–अमेरिका में न्यूयार्क के शहर बफेलो में 24 सितंबर को शुरू हुआ बर्फीला तूफान पांच दिन बाद थम गया और तकरीबन 82 इंच मोटी बर्फ की चादर के नीचे दबे शहर की खुदाई का काम शुरू हुआ।

2002–पाकिस्तान पर्यटकों को भारत के तीन शहरों में घूमने की अनुमति।

2004–सुनामी लहरों के कारण इंडोनेशिया में मरने वालों की संख्या 60,000 पहुँची। 2006–चीन ने वर्ष 2006 में राष्ट्रीय रक्षा पर श्वेत पत्र जारी किया।

कब और कैसे लेना चाहिए विटामिन–डी सप्लीमेंट्स, पूरे फायदे के लिए यहां जान लें सही तरीका

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

विटामिन–डी हमारे शरीर के लिए बेहद जरूरी है। यह हड्डियों में स्वास्थ्य, कैल्शियम अब्जॉर्प्शन, मजबूत इम्युनिटी और मेंटल हेल्थ के लिए बेहद जरूरी है। लेकिन हमारी लाइफस्टाइल और धूप में कम समय बिताने के कारण ज्यादातर भारतीयों में इसकी कमी पाई जाती है। ऐसे में डॉक्टर अक्सर विटामिन–डी सप्लीमेट्स लेने की सलाह देते हैं।

लेकिन इन सप्लीमेंट्स का पूरा फायदा तभी मिलता है, जब इन्हें सही तरीके से लिया जाए। सप्लीमेंट्स लेने का सही तरीका और समय पता होना जरूरी है, तभी इसका पूरा फायदा आपको मिल पाएगा।

विटामिन–डी फैट–सॉल्युबल विटामिन है। इसका सीधा–सा मतलब है कि यह पानी में नहीं, बल्कि फैट में घुलता है। इसलिए शरीर में इसके ठीक से अब्जॉर्ब होने के लिए, इसे फैट की जरूरत होती है। इसलिए अगर आप इसे खाली पेट लेते हैं, तो इसकी अब्जॉर्प्शन रेट काफी कम हो सकती है, जिससे सप्लीमेंट लेने का मकसद पूरा नहीं हो पाता।

फैटी मील के साथ लें– क्योंकि विटामिन–डी फैट–सॉल्युबल है, इसलिए इसे हमेशा ऐसे खाने के साथ लेना चाहिए जिसमें हेल्दी फैट्स मौजूद हों। यह फैट विटामिन–डी को शरीर में घुलने और ब्लड में अब्जॉर्ब होने में मदद करते हैं। इसलिए इसे दूध, नट्स, घी, अंडे या अवोकाडो के साथ लें।

सही समय भी है जरूरी– विटामिन–डी सप्लीमेंट्स को

सुबह या दोपहर के खाने के साथ लेना ज्यादा बेहतर है। सुबह का समय इसलिए बेहतर माना जाता है क्योंकि इस समय मेटाबॉलिज्म हाई होता है और पोषक तत्वों का अब्जॉर्प्शन बेहतर होता है।

खुराक और नियमितता– विटामिन–डी की खुराक हर व्यक्ति की कमी के स्तर, उम्र और हेल्थ कंडीशन पर निर्भर करती है। इसलिए हमेशा डॉक्टर की बताई गई खुराक ही लें और चाहे आप रोज खुराक ले रहे हों या साप्ताहिक, एक निश्चित समय और दिन तय करें और उसका सख्ती से पालन करें।

अगर आप किडनी की बीमारी से पीड़ित हैं या आपको किडनी स्टोन की समस्या है, तो विटामिन–डी सप्लीमेंट्स लेने से पहले डॉक्टर से सलाह लेना बेहद ज़रूरी है। दरअसल, विटामिन–डी कैल्शियम अब्जॉर्प्शन को बढ़ाता है। अगर आप हाई डोज ले रहे हैं, तो इससे शरीर में कैल्शियम लेवल बढ़ सकता है, जो किडनी में दमा होने लगता है और स्टोन्स की वजह बन सकता है।

सरकार ने पार्वती–अरगा पक्षी अभ्यारण्य को पर्यावरण संवेदनशील क्षेत्र घोषित किया

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

उत्तर प्रदेश सरकार ने पार्वती–अरगा पक्षी अभ्यारण्य को पर्यावरण संवेदनशील क्षेत्र घोषित किया है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि इस पहल का उद्देश्य पक्षी अभ्यारण्य को पर्यावरण पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना है। उन्होंने कहा कि सरकार इसकी जैव विविधता को मजबूत करने की दिशा में काम कर रही है। श्री सिंह ने कहा कि एक सौ 84 हेक्टेयर में फैले इस अभ्यारण्य में मध्य एशिया और तिब्बत से प्रवासी पक्षी आते हैं।

भारत में 62 फीसदी मुंह के कैंसर की वजह शराब और धुआं रहित तंबाकू का सेवनः अध्ययन

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

भारत में मुंह के कैंसर की बड़ी वजह शराब के साथ धुआं रहित तंबाकू उत्पादों का सेवन है। बुधवार को प्रकाशित एक रिपोर्ट में इसका खुलासा किया गया। स्टडी के अनुसार, भारत के 10 में से छह से ज्यादा लोग स्थानीय स्तर पर बनी शराब के साथ ही गुटखा, खैनी और पान जैसे धुआं रहित तंबाकू उत्पादों का सेवन करने के कारण मुंह के कैंसर से पीड़ित हैं।

महाराष्ट्र में सेंटर फॉर कैंसर एपिडेमियोलॉजी और होमी भाभा नेशनल इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं की एक टीम द्वारा किए गए अध्ययन से पता चला है कि दिन में 2 ग्राम से कम बीयर पीने से बक्कल म्यूकोसा कैंसर का खतरा बढ़ जाता है, जबकि दिन में 9 ग्राम शराब जो लगभग एक मानक ड्रिंक के बराबर है से मुंह के कैंसर का खतरा लगभग 50 प्रतिशत बढ़ जाता है।

जब इसे चबाने वाले तंबाकू के साथ मिलाया जाता है, तो यह देश में ऐसे सभी मामलों में से 62 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार हो सकता है। ओपन–एक्सेस जर्नल बीएमजे ग्लोबल हेल्थ में विस्तार से बताए गए निष्कर्षों से पता चलता है कि भारत में सभी बक्कल म्यूकोसा कैंसर के 10 में से एक से ज्यादा मामले (लगभग 11.5 प्रतिशत) शराब के कारण होते हैं। मेघालय, असम और मध्य प्रदेश जैसे कुछ राज्यों में इसके मरीजों की संख्या ज्यादा है। कहीं–कहीं तो इसकी दर 14 प्रतिशत तक है।

ग्रेस सारा जॉर्ज के नेतृत्व वाली रिसर्च टीम ने बताया, "भले ही तंबाकू का इस्तेमाल लंबे समय से किया जाता रहा हो, लेकिन मुंह के कैंसर को बढ़ाने में शराब बड़ा कारक है। दरअसल, इथेनॉल मुंह की अंदरूनी परत में मौजूद फैट को प्रभावित कर सकता है; ये परत कमजोर हो जाती है, और नतीजतन ये तंबाकू उत्पादों में मौजूद अन्य कार्सिनोजेन के प्रति ज्यादा संवेदनशील हो जाती है।"

उन्होंने कहा, "स्थानीय रूप से बनी शराब में मेथनॉल और एसीटैल्डिहाइड जैसे टॉक्सिन की मिलावट ज्यादा पाई जाती है, जो इन ड्रिंक्स को ज्यादा खतरनाक बनाती है।" मुंह का कैंसर भारत में दूसरा सबसे आम कैंसर है, जिसमें एक अनुमान के अनुसार हर साल 143,759 नए मामले सामने आते हैं और 79,979 लोगों की मौत होती है। शोधकर्ताओं के अनुसार इस बीमारी की दर लगातार बढ़ रही है, और हर 100,000 भारतीय पुरुषों में से लगभग 15 इससे जूझ रहे हैं।

भारत में मुंह के कैंसर का मुख्य रूप गालों और होठों की मुलायम गुलाबी परत (बक्कल म्यूकोसा) का कैंसर है। पीड़ितों में से आधे से भी कम (43 प्रतिशत) पांच या उससे ज्यादा साल तक जीवित रहते हैं।अध्ययन में, शोधकर्ताओं ने 2010 और 2021 के बीच पांच अलग–अलग अध्ययन केंद्रों से बक्कल म्यूकोसा कैंसर से पीड़ित 1,803 लोगों और बीमारी से मुक्त 1,903 यादृच्छिक रूप से चुने गए लोगों (कंट्रोल) की तुलना की। अधिकांश प्रतिभागियों की उम्र 35 से 54 वर्ष के बीच थी; लगभग आधे (लगभग 46 प्रतिशत) मामले 25 से 45 साल के लोगों में थे। जो लोग शराब नहीं पीते थे, उनकी तुलना में शराब पीने वालों में खतरा 68 प्रतिशत ज्यादा था। बीयर, व्हिस्की, वोदका, रम और ब्रीजर (लेवर्ड अल्कोहलिक ड्रिंक्स) जैसे अंतरराष्ट्रीय ब्रांड की शराब पीने वालों में इसकी दर 72 प्रतिशत थी, तो अपोंग, बांग्ला, चुल्ली, देसी दारू और महुआ जैसे स्थानीय रूप से बनी शराब पीने वालों में इसकी दर 87 फीसदी थी।

टीम ने कहा, "हमारे अध्ययन से पता चलता है कि मुंह के कैंसर से बचने के लिए शराब पीने की कोई सुरक्षित सीमा नहीं है। हमारे नतीजे बताते हैं कि शराब और तंबाकू के इस्तेमाल की रोकथाम के लिए पब्लिक हेल्थ एक्शन लेने की जरूरत है; इससे ही बक्कल म्यूकोसा कैंसर पर लगाम लगाई जा सकती है।"

पानी पर तैरता है अर्जेंटीना का यह द्वीप, अंतरिक्ष से देखने पर लगती है 'पृथ्वी की आंख'

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

अर्जेंटीना में एक रहस्यमय द्वीप है। इस द्वीप का नाम एल ओजो है जो अर्जेंटीना के दलदली पराना डेल्टा में मौजूद एक निर्जन द्वीप है। इस द्वीप की खास बात है कि यह तैरता है। यह एकदम गोल है, जो आसमान से देखने पर किसी आंख की तरह लगता है। इसके नाम का मतलब आंख ही होता है। एक डॉक्यूमेंट्री की शूटिंग के दौरान 2016 में फिल्ममेकर्स का ध्यान एल ओजो की तरफ गया। डायरेक्टर सर्गियो न्यूस्पिलर के नेतृत्व में दल ने द्वीप के ऊपर से उड़ान भरी।

इस दौरान उन्होंने डेल्टा की कटी हुई वनस्पति के बीच द्वीप की उपस्थिति देखी। उस समय उन्होंने एक न्यूजपेपर को बताया कि हमें एकदम सटीक गोला मिला, जैसाकि हमने आसमान से देखा। उन्होंने आगे बताया कि पानी देखने में एकदम काला लग रहा था, लेकिन वास्तव में यह पारदर्शी था। डेल्टा में पानी गंदा होता है, ऐसे में साफ पानी खोजना भी दुर्लभ है। एल ओजो एक क्रिस्टल–स्पष्ट झील में तैरता है।

एल ऑब्जर्वेडर के मुताबिक कटाव की धीमी प्रक्रिया के कारण द्वीप और झील के किनारे ने एक–दूसरे के किनारों को चिकना कर दिया है। यह द्वीप तस्वीर में देखने पर छोटा लगता है, लेकिन इसका व्यास 118 मीटर है। यह द्वीप पौधों से बना है। झील की धारा के जरिए यह अपनी

धुरी पर घूमता है और किनारों से चिपक जाता है। इस निरंतर गति का मतलब है कि एल ओजो ने झील को चौड़ा कर दिया और इसके किनारों के एक पूर्ण डिस्क में बदल दिया।

अर्जेंटीना के न्यूज आउटलेट एल क्रोनिस्टा के मुताबिक यह द्वीप दक्षिणावर्ती दिशा में चलता है। हालांकि यह साफ नहीं है कि द्वीप कब और कैसे जमीन से अलग हुआ। लेकिन यह पहली बार लगभग 20 साल पहले सैटेलाइट तस्वीरों में दिखाई दिया। न्यूस्पिलर और उनके दल ने शोध के दौरान पाया कि स्थानीय निवासी एल ओजो के बारे में जानते थे। लेकिन इसे लेकर कई भ्रांतियां भी हैं। स्थानीय लोग द्वीप से डरते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि वहां एक प्राचीन देवता रहता है। वहीं कई लोगों का कहना है कि यह एलियन स्पेसक्राट को आकर्षित करता है।

कैसे बनाई जाती हैं मिट्टी की बोतलें, इससे पानी पीने से क्या होता है फायदा?

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

पुराने समय में लोग गर्मी से निजात के लिए मिट्टी के बर्तनों का खास प्रयोग करते थे. जो गर्मी से तो राहत देता ही था साथ ही सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद साबित होता है. वहीं अब प्रचंड गर्मी में हम फ्रिज से हुआ ठंडा पानी प्रयोग में लाने लगे हैं, जो हमारे शरीर में कई तरह की बीमारियों को भी जन्म देता है. हालांकि अब प्लास्टिक और स्टील के अलावा मिट्टी से बनी बोतलें भी आपको मार्केट में मिल जाएंगी. जिनका इस्तेमाल कई लोग करते हैं. ऐसे में चलिए जानते हैं कि आखिर ये बोटले बनती कैसे हैं और इनमें पानी पीने से क्या फायदा होता है.

जिस तरह कुम्हार मिट्टी से घड़ा बनाता है या अन्य चीजें बनाता है उसी तरह वो मिट्टी की बोतल भी बनाता है. इसके लिए चुनकर मिट्टी लाई जाती है और कुम्हार उन्हें बोतल के आकार में ढाल देता है. गर्मी के मौसम में इन बोतलों की खासा डिमांड रहने लगी है, हालांकि इनके टूटने के डर से कम ही लोग इनका इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन इस्तेमाल करने वाले लोग इनका भी सही से इस्तेमाल करते हैं. ये बोतलें ठंडा पानी तो देती ही हैं साथ ही इनके कई अन्य फायदे भी हैं.

मिट्टी के घड़े या मटके में रखा पानी पीना पूरी तरह से पर्यावरण के अनुकूल होता है. उसी तरह मिट्टी की बोतलें भी होती हैं, क्योंकि मटके या घड़े मिट्टी से बने होते हैं. जबकि आजकल इस्तेमाल होने वाली पानी की बोतलें

प्लास्टिक और मेटल से बनी होती हैं. मिट्टी के बर्तन या मटके बायोडिग्रेडेबल होते हैं और पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करते.

इसके अलावा मिट्टी की बनी बोटल या घड़े में पानी शुद्ध रहता है. मिट्टी का घड़ा पानी की अशुद्धियों और विषाक्त पदार्थों को फिल्टर करता है. यही वजह है कि मटके का पानी काफी स्वच्छ और शुद्ध होता है. मिट्टी के बर्तन या मटके केमिकल फ्री भी होते हैं, इसलिए स्वास्थ्य को हानि नहीं पहुंचाते.

वहीं मटके या मिट्टी की बोतल में रखा पानी पीएच लेवल बैलेंस करने के भी काम आता है. दरअसल ये क्षारीय प्र.ति पानी की अम्लता यानी एसिडिटी को बेअसर कर सकती है, जो पाचन से जुड़ी समस्याओं वाले लोगों के लिए काफी फायदेमंद है. क्षारीय पानी पीने से शरीर के पूरे पीएच बैंलेस को सुधारने में मदद मिलती है.

झेलम नदी से मिली पत्थर की मूर्ति पुरातत्व विभाग को सौंपी गई

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

जम्मू–कश्मीर के बारामूला जिले में पुलिस ने झेलम नदी से मिली पत्थर की मूर्ति संरक्षण और संवर्धन के लिए पुरातत्व विभाग को सुरक्षित सौंप दी। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। पुलिस ने यहां जारी एक बयान में कहा कि बारामूला पुलिस ने उचित प्रक्रिया का पालन करते हुए झेलम नदी से मिली पत्थर की मूर्ति को सुरक्षित रूप से स्थानांतरित किया।

बयान के अनुसार, शालतांग–जोग्यार निवासी गुलाम मोहम्मद लातू के पुत्र नाजिर अहमद लातू नामक एक मछुआरे ने बारामूला के शेरी पुलिस स्टेशन में सूचना दी कि उसे नदी में मछली पकड़ते समय एक पत्थर की मूर्ति मिली है। बयान में कहा गया कि मूर्ति की सूचना तुरंत पुलिस को दी गई और इसे शेरी पुलिस स्टेशन में सुरक्षित रखा गया। इसके बाद, जम्मू और कश्मीर के अभिलेखागार, पुरातत्व और संग्रहालय निदेशालय के आधिकारिक निर्देशों के बाद बारामूला पुलिस ने शुक्रवार को देवी दुर्गा के रूप में पहचानी गई पत्थर की मूर्ति को श्रीनगर स्थित पुरातत्व विभाग के अधिकारियों को सौंप दिया। बारामूला पुलिस ने सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और नागरिकों से ऐतिहासिक या पुरातात्विक महत्व की किसी भी खोज के बारे में अधिकारियों को तुरंत सूचित करने का आग्रह किया।

माना जा रहा है कि 1990 के दशक में कश्मीर में आतंकवाद चरम पर था। इस दौरान आतंकवादियों ने अल्पसंख्यक कश्मीरी पंडित समुदाय के कई घरों और

मंदिरों को नष्ट कर दिया था। ऐसी कई घटनाओं में देवी–देवताओं की मूर्तियों को उनके ऐतिहासिक स्थानों से हटाकर नदियों में फेंक दिया गया या अन्य स्थानों पर छोड़ दिया गया।

कश्मीर में कुछ सबसे प्राचीन हिंदू मंदिर स्थल स्थित हैं, जिनमें श्रीनगर में भगवान शिव को समर्पित प्रतिष्ठित शंकराचार्य मंदिर, सूर्य देव को समर्पित नौवीं शताब्दी का खंडहर हो चुका मार्तंड सूर्य मंदिर, अवंतीपोरा में नदी किनारे स्थित अवंतीस्वामी और अवंतीश्वर मंदिरों के खंडहर और पांद्रेथन का प्राचीन शिव मंदिर शामिल हैं। इस क्षेत्र में तुल्लामुल्ला का खीर भवानी मंदिर और हरि पर्वत का शारिका माता मंदिर जैसे पूजनीय स्थल भी हैं, जो कश्मीर की समृद्ध शैव और वैष्णव विरासत को दर्शाते हैं।

2025 में भारत के वस्त्र क्षेत्र में मिली बड़ी सफलता, निवेश और निर्यात में हुई शानदार बढ़ोतरीः केंद्र

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

भारत के वस्त्र क्षेत्र ने 2025 में निवेश और निर्यात में भारी वृद्धि दर्ज की है, जिसे सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं और व्यापार में आसानी के लिए किए गए आर्थिक सुधारों से बल मिला। सरकार ने विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर से लैस 7 पीएम मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीजन एंड अपैरल (पीएम मित्र) पार्कों के निर्माण को मंजूरी दी है, जिनमें प्लग एंड प्ले सुविधा भी शामिल है। इन पार्कों के लिए 4,445 करोड़ रुपए का बजट तय किया गया है। ये पार्क तमिलनाडु, तेलंगाना, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में बनेंगे।

अब तक 27,434 करोड़ रुपए से अधिक के निवेश समझौते किए जा चुके हैं और 100 प्रतिशत जमीन भी पार्कों के लिए खरीद ली गई है। सभी राज्य सरकारों ने पार्कों के लिए 2,590.99 करोड़ रुपए की लागत से इंफ्रास्ट्रक्चर कार्य शुरू कर दिया है। सरकार ने राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन (एनटीटीएम) की शुरुआत की है, जिसमें 1,480 करोड़ रुपए का निवेश किया जाएगा। इस मिशन का उद्देश्य तकनीकी वस्त्र के उपयोग को बढ़ाना और इसे रक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रमोट करना है।

वित्त वर्ष 2024–25 में हस्तशिल्प सहित वस्त्र एवं परिधान निर्यात ने 5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की और यह 37.8 अरब डॉलर तक पहुंच गया। इस निर्यात का सबसे बड़ा हिस्सा अमेरिका, यूरोपीय संघ और ब्रिटेन को गया, जबकि बांग्लादेश, यूएई, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे नए देशों ने भी निर्यात में 20 प्रतिशत योगदान किया। सरकार ने वस्त्र क्षेत्र में जीएसटी की दर को 5 प्रतिशत कर दिया है, जो पहले 12 प्रतिशत थी। यह कदम निर्यात को बढ़ावा देने और कला कारीगरों की मदद करने के लिए उठाया गया है।

इस क्षेत्र में वस्त्र व्यापार संवर्धन (टीटीपी) विभाग ने भी भारत की वैश्विक वस्त्र बाजार में उपस्थिति को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई है। 2024 में भारत वस्त्र और परिधान का छठा सबसे बड़ा निर्यातक बनकर उभरा, जिसमें इस क्षेत्र का भारत के कुल निर्यात में 8.63 प्रतिशत का महत्वपूर्ण योगदान रहा और वैश्विक व्यापार में इसकी हिस्सेदारी 4.1 प्रतिशत रही।

भारत का कपास क्षेत्र कृषि अर्थव्यवस्था का अहम हिस्सा है, जो 60 लाख किसानों और 400–500 लाख लोगों को रोजगार देता है। 2024–25 के सीजन में निगम ने 525 लाख क्विंटल कपास की खरीद की और 37,450 करोड़ रुपए किसानों को वितरित किए। सरकार ने हस्तशिल्प और हैंडलूम के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं, जिसमें 11,544 कारीगरों को मुद्रा योजना के तहत लोन दिया गया है। साथ ही, 2.35 लाख लोग सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जुड़ चुके हैं।

सीनियर राष्ट्रीय बैडमिंटन चैंपियनशिप के महिला सिंगल्स फाइनल में सूर्या करिश्मा तामिरी का सामना तन्वी पात्री से

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

87वीं सीनियर राष्ट्रीय बैडमिंटन चैंपियनशिप के महिला सिंगल्स फाइनल में, आज विजयवाड़ा में सूर्या करिश्मा तामिरी का सामना तन्वी पात्री से होगा। सेमीफाइनल में आंध्रप्रदेश की सूर्या ने रक्षिता श्री आर. को हराया था। तन्वी पात्री श्रुति मुंडाडा को हराकर पहली बार फाइनल में पहुंची हैं।

पुरुष सिंगल्स फाइनल में रित्विक संजीव एस. का सामना भरत राघव से होगा। सेमीफाइनल में रित्विक ने किरण जॉर्ज को और भरत राघव ने एम. तरुण को हराया था। मिक्स्ड डबल्स फाइनल में आशीष सूर्या और अमृता पी. का मुकाबला सत्विक रेड्डी के. और राधिका शर्मा की जोड़ी से होगा।

महिला डबल्स में शिखा गौतम और अश्विनी भट का मुकाबला प्रिया देवी कोंजेंगबन और श्रुति मिश्रा की जोड़ी से होगा।

जरूर करवाने चाहिए ये 5 हेल्थ टेस्ट, मिनटों में लग जाएगा खतरनाक बीमारियों का पता

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर।

आजकल की भाग–दौड़ भरी जिंदगी में सेहत अक्सर पीछे छूट जाती है। काम का प्रेशर, अनियमित दिनचर्या और खराब खान–पान की आदतों ने हमें उन बीमारियों का घर बना दिया है जो पहले उम्रदराज लोगों में ही देखने को मिलती थीं। डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल और थायरॉइड जैसी बीमारियां अब युवाओं को भी आसानी से अपनी चपेट में ले रही हैं।

ऐसे में, जरूरी है कि हम नियमित रूप से हम अपनी सेहत की जांच करवाते रहें, ताकि बीमारियों का वक्त रहते पता चल सके। हर तीन महीने पर कुछ हेल्थ चेकअप करवाना बीमारियों का जल्दी पता लगाने और स्वस्थ रहने में आपकी मदद कर सकते हैं।

ब्लड शुगर टेस्ट– डायबिटीज एक साइलेंट किलर है। अनहेल्दी डाइट, मोटापा और तनाव इसके मुख्य रिस्क फैक्टर्स हैं। इसलिए हर 3 महीने में ब्लड शुगर की जांच करवाने से आप यह पता लगा सकते हैं कि आपका ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल में है या नहीं। इससे प्री–डायबिटिक स्थिति का पता चलता है, जिससे आप समय रहते अपनी डाइट और लाइफस्टाइल में सुधार कर इस गंभीर बीमारी को होने से रोक सकते हैं।

लिपिड प्रोफाइल टेस्ट– यह टेस्ट आपके शरीर में कोलेस्ट्रॉल लेवल की जानकारी देता है। इसमें एचडीएल, एलडीएल और ट्राइग्लिसराइड्स के लेवल की जांच की जाती है। खराब कोलेस्ट्रॉल का बढ़ना हार्ट अटैक और स्ट्रोक के खतरे को कई गुना बढ़ा देता है। नियमित जांच से आप अपनी हार्ट हेल्थ पर नजर रख सकते हैं और जरूरत पड़ने पर डॉक्टर की सलाह से डाइट में बदलाव या दवाएं शुरू कर सकते हैं।

कंप्लीट ब्लड काउंट– सीबीसी एक बेसिक लेकिन बेहद

जरूरी टेस्ट है, जो आपके पूरे स्वास्थ्य की एक झलक पेश करता है। यह टेस्ट शरीर में रेड ब्लड सेल्स, व्हाइट ब्लड सेल्स, हीमोग्लोबिन और प्लेटलेट्स की संख्या बताता है। इससे एनीमिया, इन्फेक्शन, इन्लेमेशन या ब्लड कैंसर जैसी गंभीर समस्याओं के शुरुआती संकेत मिल सकते हैं। यह शरीर की इंटरनल कंडीशन को समझने का एक खिड़की की तरह काम करता है।

थायरॉइड फंक्शन टेस्ट– थायरॉइड ग्लैंड हमारे मेटाबॉलिज्म को कंट्रोल करती है। आजकल हाइपोथायरॉइडिज्म और हाइपरथायरॉइडिज्म की समस्या आम हो गई है। थायरॉइड का स्तर बिगड़ने से वजन बढ़ना–घटना, थकान, बाल झड़ना, मूड स्विंग्स जैसी कई समस्याएं हो सकती हैं। नियमित जांच से थायरॉइड को कंट्रोल करने और इससे जुड़ी कॉम्प्लिकेशन्स से बचा जा सकता है।

ब्लड प्रेशर– हाई ब्लड प्रेशर को भी 'साइलेंट किलर' कहा जाता है क्योंकि अक्सर इसके कोई खास लक्षण दिखाई नहीं देते। लगातार हाई बीपी हार्ट, किडनी और ब्रेन पर दबाव डालती है और गंभीर नुकसान पहुंचा सकती है। हर 3 महीने में बीपी की जांच करवाना आपकी सेहत के लिए काफी फायदा हो सकता है। इससे आप यह तय कर सकते हैं कि आपका ब्लड प्रेशर सामान्य सीमा (120/80 के आसपास) में है या नहीं।